कृष्णा सोबती की रचनाओं में बहुस्वरता

डॉ. सुरेश ए., एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, श्री. शंकरा कॉलेज कालडी, एर्णाकुलम, केरल 683574

हिंदी साहित्य के समकालिन परिदृश्य पर कृष्णा सोबती एक विशिष्ट रचनाकार के रूप में समादृत हैं। वे हिंदी की सबसे सहज, सबसे गम्भीर, सबसे आत्मीय ,सबसे यथार्थनिष्ठ, सबसे विचारवती और सबसे प्रतिबद्ध महिला कथाकार हैं। एक नारी होने के नाते उन्होंने नारी मन के अंतरंग को पूर्ण ईमानदारी और सच्चाई के साथ अपनी रचनाओं में अंकित करने का साहस दिखाया है। उन्होंने इतिहास को जिया है और देश के विभाजन का दर्द सहा है और जीवन और कालखंड की इसी सच्चाई को पन्ने पर उतारा। उन्होंने अपेक्षाकृत कम कृतियाँ लिखकर भी न केवल अपनी सशक्त पहचान और लोकप्रियता प्राप्त किया है। कृष्णा सोबती का महत्व सिर्फ इस बात में नहीं है कि उन्होंने अपने साहित्य में अपने समकालीन संदर्भों को जगह दी बल्कि उससे अधिक इस बात में कि उन्होंने जिस शिल्प और संवेदना के माध्यम से मानवीय संबंधों और संवेदनाओं का चित्रण किया वह उन्हें अन्य लेखकों से अलग पहचान दिलाता है।

कृष्णा सोबती का जन्म पाकिस्तान के गुजरात प्रांत में 18 फरवरी 1925 को हुआ था। विभाजन के बाद उनका परिवार दिल्ली आकर बस गया। कृष्णा जी ने अपने लेखन की शुरुआत पचास के दशक में की। कृष्णा सोबती को उनके उपन्यास "जिंदगीनामा" के लिए 1980 में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया था। यह उपन्यास विभाजन की समस्या को लिया गया है। उन्हें 1996 में उन्हें साहित्य अकादमी का फेलो बनाया गया जो अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने देश का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार, साल 2017 के लिए कृष्णा सोबती को सहित्य के उनके उल्लेखनिय योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनकी कृतियों का सरोकार स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री-अस्मिता की सार्थकता, भारत विभाजन, भारतीय समाज में आते बदलाव और मानवीय मूल्यों के पतन आदि बुनियादी समस्याओं से जुड़ा है।

कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उनकी अपनी भाषा और अपना शिल्प विधान है। उनके भाषा संस्कार के घनत्व, जीवंत प्रांजलता और संप्रेषण ने हमारे समय के अनेक पेचीदा सत्य उजागर किए हैं। लोक जीवन के परिवेश को लेकर इनकी भाषा शैली हिंदी कथा साहित्य को नये रचनात्मक आयाम देते हुये आज भी बढ़ रही है। कृष्णा जी की सर्वप्रथम विशेषता है कि वे काफी बेबाक और खुलेपन हो कर लिखती है। उनकी पहली कहानी, 'लामा' 1950 में प्रकाशित हुई। उपन्यास,कहानी, काव्य, संस्मरण आदि विधाओं में वे खूब सक्रिय रही। उनकी दिलचस्पी कविताओं में भी रही है। उन्होंने समय और समाज को केंद्र में रखकर अपनी रचनाओं में एक युग को जिया है।

कृष्णा सोबती अपनी रचनाओं में आधुनिक युग के यथार्थ जीवन को प्रस्तुत करती हैं। कृष्णा जी नारी जीवन को पहचाने और उसके चित्रण में सिद्धहस्त है। इन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओं में

नारी के विभिन्न वास्तविक रूप और पुरुष के कटु रूप भी प्रस्तुत किए हैं। हिंदी में स्त्री अस्मिता, स्वानुभूतियों, स्त्री मन के सूक्ष्म स्पंदनों को अपने लेखन में मजबूती से रखने वाली लेखिकाओं में कृष्णा सोबती का नाम लिया जाएगा। वे विशेषत: सामाजिक समस्याओं और नारी उत्पीड़न से संबंघित विषयों में खूब सक्रिय रही है । उन्होंने नारी चेतना को जाग्रत करने का कार्य किया है। इनका लेखन परंपरा से थोड़ा हटकर है। कृष्णा जी की साहित्य लेखन और साहित्य व्यवहार के कारण उनकी कहानियों को लेकर काफी विवाद हुआ है क्योंकि स्त्री होकर ऐसी साहसी लेखन करना सभी लेखिकाओं को लिए संभव नहीं है।

कृष्णा जी "जिंदागीनामा", "ऐ लड़की", "मित्रो मरजानी" जैसी कथा कृतियों की यशस्वी लेखिका है। "नामवर सिंह ने कृष्णा सोबती के उपन्यास "डार से बिछुड़ी' और "मित्रो मरजानी' का उल्लेख मात्र किया है और सोबती को उन उपन्यासकारों की पंक्ति में गिनाया है, जिनकी रचनाओं में कहीं वैयक्तिक तो कहीं पारिवारिक-सामाजिक विषमताओं का प्रखर विरोध मिलता ।"1 बादलों के घेरे", "डार से बिछुड़ी", "तिन पहाड़" एवं मित्रो मरजानी" कहानी-संग्रहों में कृष्णा सोबती ने नारी को अश्लीलता की कुंठित राष्ट्र को अभिभूत कर सकने में सक्षम अपसंस्कृति के बल-संबल के साथ ऐसा उभारा है कि साघारण पाठक हतप्रभ तक हो सकता है।

1966 में प्रकाशित उनका उपन्यास ‘‘"मित्रो मरजानी"’’ जिसके जरिये उन्होंने स्त्रियों की दैहिक आजादी के सवाल को मुखरता से उठाया था बहुत मशहूर और चर्चित हुआ । यह उपन्यास ने हिंदी जगत को झकझोर दिया था। जिस दौर में स्त्रियों के लिए "सेक्स" की बात करना सम्भव ही न था, कृष्णा जी ने ऐसी मित्रो को रच दिया जो इस वर्जित प्रदेश में स्वच्छन्द विचरण करती थी । एक विवाहित महिला मित्रो के स्वच्छंद व्यवहार से संबंधि कथा है । कृष्णा जी ने 'स्त्री-यौनिकता' को प्रमुखता से रेखांकित कर उन अनछुए पहलुओं को अपनी रचनाओं में उजागर करने का साहस किया है।

"मित्रो मरजानी" उपन्यास में उन्होंने स्त्रियों की अबूझ मनोभूमि और तन के यथार्थबोध पर खुलकर लिखकर समाज की मान्यताओं पर उगंली उठाया है। उपन्यास की पात्र मित्रो पुरूष द्वारा बनाए हुए ढ़ाँचे में ढलने को तैयार नहीं है। उनकी उन्मत्तता भारतीय नारी के तथाकथित सती-सावित्री स्वरूप को पूर्णत: नकारती है। कृष्णा जी मित्रो के ज़रिए उन तमाम नारी के अतृप्त वासना की ओर इशारा करती है जो समाज के सम्मुख चुप है। मित्रो खुले-आम अपनी इच्छा व्यक्त करती है। मित्रो के द्वारा स्त्री देह से जुड़े पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने वाला यह उपन्यास "मित्रो मरजानी' नारी देह की आजादी के प्रश्न का संकेत देता है ।

"ज़न्दिगीनामा" कृष्णा सोबती की विलक्षण भाषा-सामथ्र्य का भी परिचायक है।विभाजन पूर्व पंजाव के सांझी, संस्कृति के रिश्ते, परंपराएँ, मिथकों और विश्वासों के धागे से उपन्यास बुना गया है। ज़न्दिगीनामा में विभाजन से पहले का ग्रामीण परिवेश अपनी पूरी धूसर तबियत और स्फटिक धमक के साथ मौजूद है। यह मुख्यत: पंजाब के ग्रामीणों एवं कृषकों के इर्द-गिर्द बुनी हुई कृती है। "ज़न्दिगीनामा" की कहानी इन्हीं लोगों के साथ बहती है और इन लोगों के साथ ही खेत-खलिहानों, पर्व-त्योहारों, लड़ाई-झगड़ों से गुज़रते है।

"समय-सरगम" उम्र के आखिरी चरण यानी वृद्धावस्था के जिस नीरव, एकांत और अकेलेपन की तहों में चुपचाप दम साथे उतरता है, उसका एक सुरताल है।यह उपन्यास परंपरा और आधुनिकता का समन्वय ही समय सरगम है। उपन्यास के लगभग सभी पात्र जीवन के अंतिम दौर से गुजर रहे हैं। वृद्ध जनों की त्रासद स्थिति, विवशता, मृत्यु-भय तथा पारिवारिक सामाजिक उपेक्षा को महसूस करते इन पात्रों में उदासी, अकेलापन, अविश्वास घर करते जा रहा है, ऐसे में उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र आरण्या जीवन के अंतिम क्षण तक भी मौत को स्थगित करके जीवन के प्रति गहरी आस्था के लिए जी रही है।

आरण्या अतीत से ज्यादा वर्तमान में जीती है। वे लेखिका है, अकेली है, और उनका अकेले रहने का फैसला इस उम्र में उनकी समस्या नहीं है, बल्कि उनकी स्वतंत्रता को सूचित करता है। आज की नारी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की भाँति स्वयं को

प्रतिष्ठित करना चाहती है। आरण्या के सामने परंपरा एक चुनौती बनकर हो जाती है। आरण्या जीवन के अंतिम दौर पर खड़ी एक ऐसी स्त्री है जिसमें अकेलेपन की व्यथा नहीं है, जीवन को भरपूर जीने की अदम्य लालसा है । उपन्यास के पात्र दमयंती, कामिनी और किशोर के माध्यम से बूढ़ों के प्रति क्रूर होते हमारे समाज की निष्ठुरता की तस्वीर भी कृष्णा जी खींचती है। इस उपन्यास में नारी -पुरुष समानता का भी पक्षधर परिलक्षित होता है।

कृष्णा जी की "तिन पहाड़" पुरुषवर्चस्व की औपनिवेशिकता में फँसी एक ऐसी निरभ्र युवती की कहानी है, जो अपनी मूल्यनिष्ठा के वशीभूत किसी तरह का कोई समझोता या समायोजन करने के स्थान पर स्वयं मृत्यु क वरण करना ज्यादा उपयुक्त समझती है। कहानी के तीन पात्र है, जया, तपन, और श्री। जया श्री से प्रेम करती है और तपन जया से प्रेम करता है। ये तीन व्यक्ति अपने मौलिक व्यक्तियों से कटकर अन्यत्र किसी तीसरे से जुड़ने की प्रक्रिया में खंडित होते हैं। श्री और जया की पहचान बचपन से थी और यह पहचान सगाई के रूप में परिणति पाता है। लेकिन श्री विदेश जाकर एडना से विवाह करता है। श्री के विवाह की सूचना पाते ही जया आत्मव्यर्थता के दंश से पीड़ित होने लगती है और घर छोड़ जाती है। फिर उसकी मुलाकात तपन से होती है जो उसे प्रेम करता है। लेकिन जया श्री के स्मरणों से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाती।

"सूरजमुखी अँधेरे के" का मूल कथ्य नए दौर में नारी की बदलती स्थिति को दर्शाना है। एक स्त्री के बचपन और उसके संघर्ष की कहानी बयान की गई, इस उपन्यास में स्त्री-स्वाधीनता और नारी मुक्ति के सवाल को कृष्णा जी अपनी धरती और मिट्टी से जोड़कर देखती हैं और समूचे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उसकी अनिवार्यता को रेखांकित करती हैं । "सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती आधुनिक शिक्षित नारी है जो दुष्कर्म का शिकार होने के पश्चात् भी अपने नोचे हुए आँचल को अपनी मजबूत पकड़ से छूटने नहीं देती हैं। उस पर बचपन में किए गए अत्याचार को ही अपने परवर्ती विचलन का आधारभूत कारण मानती है । देह के प्रति बरती गई क्रूरता ने ही देह के प्रति उसे उदासीन बना दिया है और बाद में उसके जीवन में दिवाकर नामक युवा आता है। रत्ती दिवाकर को पहले अपना मन देती है, फिर तन भी दे बैठती है। लेकिन रत्ती दिवाकर के विवाह का प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। यह नारी मुक्ति की छटपटाहट का ज्वलन्त उदाहरण है।

कृष्णा जी की उपन्यास दिलो-दानिश (1993) एक नारी की व्यथा गाथा है। इसमें विवाहोतर संतान और उसकी स्वीकृति का प्रश्न भी अपनी जटिलताओं और तिखेपन के साथ उपस्थिति है। अवैद संतान की समस्या को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास भी उल्लेखनीय है। जैसा शीर्षक से स्पष्ट है कि यह उपन्यास दिल और दिमाग के संघर्ष की कथा, प्रेम और समाज के बंधन की कथा, जजबात और व्यवहार के ठकराव की कथा है। उपन्यास वकील साहब राजनारयण की उलझी जींदगी पर केंद्रित है । पत्नी और प्रेमी के बीच संतुलन कायम रखने में लड़खड़ाने लगते है। उपन्यास में पत्नी कुटुम और प्रेमीका महक बानो से जुड़ी संवेदनाओं, उलझनभरी मन:स्थितियों मवोभावों आदि का बहुत ही विश्वसनीय और मार्मिक चित्रण किया है।

कृष्णा सोबती ने हिंदी के आधुनिक लेखन के प्रति पाठकों में एक नया भरोसा पैदा किया है। अपने समकालीनों ओर आगे की पीढियों को मानवीय स्वातंत्र्य और नैतिक उन्मुक्तता के लिए प्रभावित और प्रेरित किया है। निज के प्रति सचेत और समाज के प्रति चैतन्य किया है। उनका समृद्ध व्यक्तित्व और स्वस्थ लेखन ही उनके सफल जीवन का परिचायक है। कृष्णा जी भारतीय समाज जीवन तथा अपनी धरती के साथ एकाकर हुई लेखिका हैं। वे मनुष्य के यथार्थ जीवन की पीड़ा और दर्द को गहराई से देखती हैं और युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । लेकिन उनकी रचनाओं को गहराई से परखने पर हम देख सकते हैं आधुनिकता की तमाम समस्याओं को उभरते विर्मशों को चाहे वह नारी मुक्ति हो, विभाजीन की विभीषिका हो, बूढापे की त्रासद स्थिति हो, अकेलापन हो, मुत्यु भय हो, अन्हें रेखांकित करने में वे सफल निकली है। वे अपने उपन्यासों द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने में सफल हुई है। कृष्णा सोबती नारी मन के गूढ़ रहस्यों को उजागर करने और महिलाओं के

विद्रोह को सुर देने वाले साहित्यकारों की जमात से आती है।

संदर्भ:

1. (डॉ. भगवतीशरण मिश्र, हिंदी की चर्चित उपन्यासकार, पृ 225)

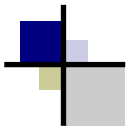

लेखक परिचय

डॉ. सुरेश ए., एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, श्री. शंकरा कॉलेज कालडी, एर्णाकुलम, केरल 683574